विषय – हिन्दी
कक्षा – कला स्नातक
वर्ष/सेमेस्टर – द्वितीय वर्ष
प्रश्नपत्र – द्वितीय
शीर्षक – एकांकी के तत्व

## स्वघोषणा–पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक एवं किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका उपयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगें। इस ई–कण्टेण्ट में जो जानकारी दी गयी है, वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

डॉ0 राजविन्दर कौर
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय सितारगंज
उधम सिहं नगर (उत्तराखण्ड)
Email- rajvinderkaur186@gmail.com

# एकांकी के तत्व

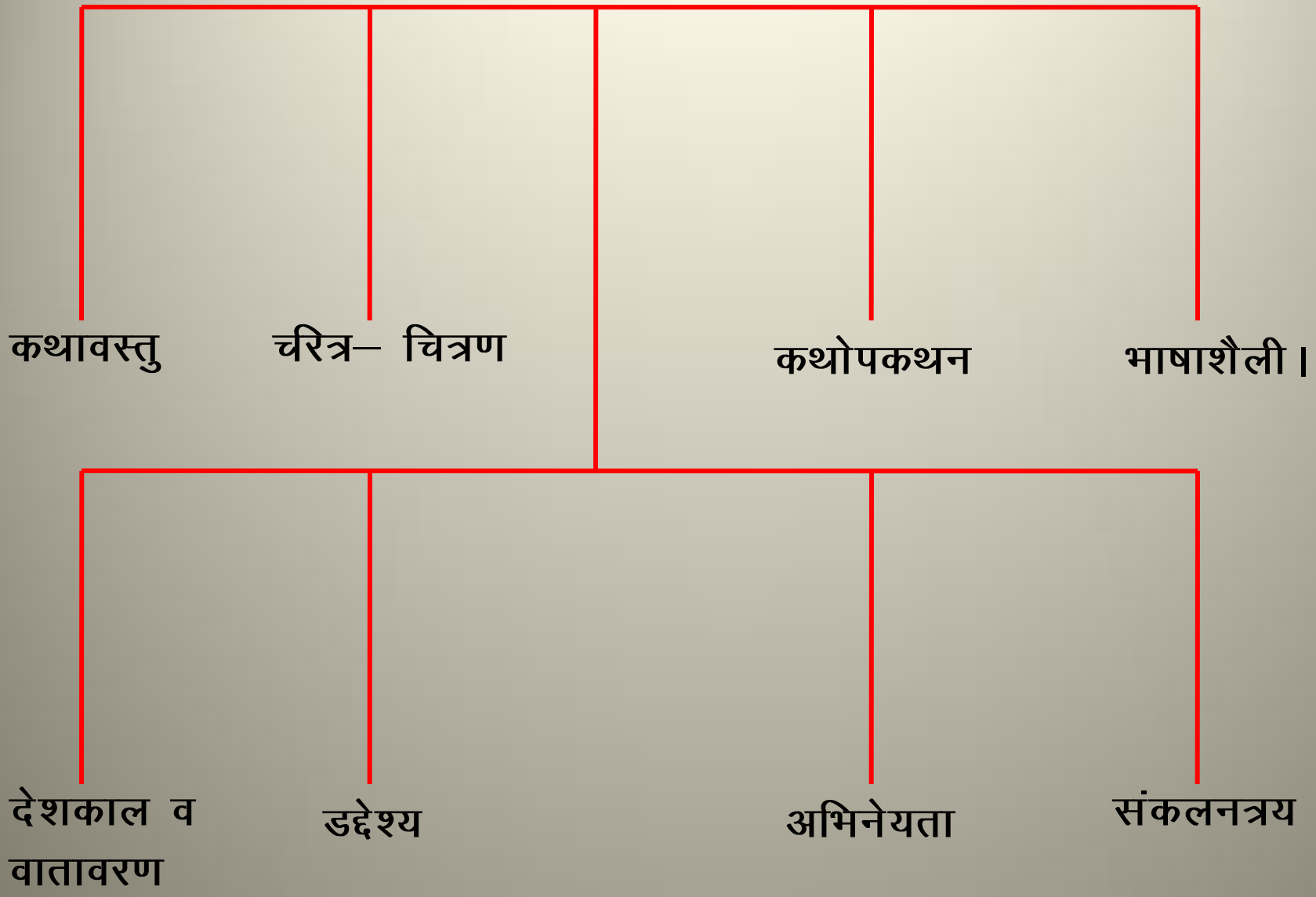
कथावस्तु
चरित्र– चित्रण
कथोपकथन
भाषाशैली।
देशकाल व वातावरण
डद्देश्य
अभिनेयता
संकलनत्रय

**'एकांकी का तात्पर्य है**– एक अंक वाला। एकांकी, नाटक का एक ऐसा भेद है, जो एक ही अंक में समाप्त हो जाता है। 'एकांकी' शब्द अंग्रेजी के 'वन एक्ट प्ले (One act Play) के हिन्दी प्रतिशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है।

## कथावस्तु

एकांकी के कथा वस्तु में यथार्थकता, स्वाभाविकता वास्तविकता और विश्वसनीयता अनिवार्य है। चाहे वह पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक या राजनैतिक हो। उसमें कसावट और सीमितता आवश्यक है। इसके विकास की चार अवस्थायें हैं–

(क)उद्घाटन

(ख)विकास

(ग)चरमोत्कर्ष

(ध)अन्त।

कथावस्तु का केन्द्र कोई एक व्यापार, घटना या भाव होता है। एकांकी का वस्तु संगठन संक्षिप्त, स्वतंत्र, सुव्यवस्थित, सुगठित और स्वयं में पूर्ण होता है।

# पात्र एवं चरित्र चित्रण

एकांकी में पात्रों की संख्या कम रहती है। इसमें पात्रों की संख्या प्रायः चार या पाँच से अधिक नहीं होती। उनका जीवन्त, वास्तविक और विश्वसनीयता होना आवश्यक है। इनके कार्य कलाप में स्वाभाविकता, सहजता और मनोवैज्ञानिकता होनी चाहि,। वाह्य व आन्तरिक संघर्ष होने से रोचकता बढ़ जाती है। इसमें दो पात्र होते हैं– (क)मुख्य (ख)गौण।

लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार पात्रों की चार श्रेणियाँ हैं–

(क) उत्तेजक – वे पात्र आते हैं जो कथा–विकास में गति प्रदान करते हैं।

(ख) माध्यम – यह नायक के मनोभावों कके विकास में सहायता करते हैं।

(ग) सूचक – कथा वस्तु को स्पष्ट करने वाले पात्रों को सूचक कहा जाता है।

(घ) प्रभाव व्यंजक – इसमें वे पात्र आते हैं जो कथा वस्तु के बीच में रहस्यमय संकेतों से प्रकश डालें।

## कथनोपकथन

पात्रों के पारस्परिक संवाद का एकांकी में अत्यधिक महत्व है। संवाद संक्षिप्त होने चाहिए जो रोचक, सहज, कलात्मक और सरल हों तथा पात्रों का चरित्र प्रकाशित करते हों। संवाद के सांकेतिक होने से उसका प्रभाव बढ़ जाता है। भावानुकूल तथा अवसरानुकूल संवाद का प्रयोग एकांकीकार की कला है। उनमें यथावसर प्रफुल्लता, उत्तेजना, विस्मय, हास्य, व्यंग्य, विनोद और मर्म पर आघात करने की क्षमता होनी चाहिए। संवाद में एक भी वाक्य ऐसा नहीं होना चाहिए जो कथानक को आगे न बढ़ाये, चरित्र पर प्रकाशन डाले और उद्देश्य हीन हो। संवाद को ही कथनोपकथन कहा जाता है। यह एकांकी का प्राण–तत्व है।

## भाषा शैली

एकांकी में तत्सम्–तद्भव, देशी–विदेशी शब्दों के प्रयोग, वाक्य रचना–साधारण, मिश्रित, संयुक्त,लक्षण व्यंजना, मुहावरा, लोकोक्ति आदि का विचार होता है। एकांकीकार को किसी एक प्रकार में शब्दावली के प्रति आग्रहवाद नहीं होना चाहि,। उसे सम्बन्धित काल या समाज में प्रचलित पात्रानुकूल शब्दावली का ही प्रयोग करना चाहि,। एकांकीकार को ऐसी शब्दावली का प्रयोग करना चाहि, जो पूर्णतः स्वाभाविक, अकृिम तथा पात्र की योग्यता और स्तर के अनुकूल हो।मुहावरों व लोकोक्तियों से भाषा की शक्ति और प्रेषणीयता बढ़ती है और थोड़े ही शब्दों में अधिक अर्थ का वहन होना चाहि,। वाक्य छोटे

और सरल हों जिससे प्रेषणीयता में कोई बाधान हो। एकांकी में बड़े–बड़े संयुक्त वाक्य अच्छे नहीं होते एकांकी की शैली त्वरायुक्त, लाक्षणिक और नाटकीय होने चाहि,।

## देशकाल और वातावरण

साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति एकांकी में भी देशकाल और वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। देशकाल और वातावरण निर्माण के लिए वह जिस समय की कथावस्तु को लेकर एकांकी की रचना करता है, उससे सम्बंधित इतिहास, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, रहन–सहन, रीति–नीति आदि को उसमें समाष्टि करता है।

## उद्देश्य

एकांकी अपने उद्देश्य में तभी सफल माना जाता है, जब वह स्थायी रूप से दर्शकों पर अपना अभीष्ट छोड़ने में सक्षम होता है।

## संकलन–त्रय

अंग्रजी के 'थ्री यूनिटीज' (Three Unities) के लिए हिन्दी में 'संकलन–त्रय' व्यवहृत होता है। संकलन त्रय (Time) कार्य (Action) और स्थान (Place) की इकाई का संकलन है। समय के एक्य का तात्पर्य है– एकांकी की मूल घटना जितने समय में घटित हो, उतने ही समय में उसका अभिनय भी पूर्ण होना चाहिए।

## अभिनेयता

एकांकी के प्रमुख तत्वों के अन्तर्गत वर्णित न होने पर भी अभिनेयता एकांकी का महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। एकांकी में कथावस्तु का ताना–बाना अभिनेता को ध्यान में रखकर ही बुना जाता है। भाव जब शारीरिक चेष्टाओं द्वारा अभिव्यक्ति को प्राप्त होता है, तो अभिनय कहलाता है।

## निष्कर्ष

रूप में कहा जा सकता है कि एकांकी के तत्वों के माध्यम से परिकल्पना पूरी हो जाती है। एकांकी में समय और पात्रों की संख्या निश्चित हो। तत्वों के माध्यम से समस्त चीजें स्पष्ट हो जाती हैं।

## बोधात्मकप्रश्न

1.एकांकी के तत्व की विवेचना कीजिये।

## सन्दर्भ–सूची

1.एकांकीधारा – लक्ष्मी शंकर गुप्ता, अमृत प्रकाशन, वाराणसी।
2.हिन्दी साहित्य का इतिहास –डॉ.नगेन्द्र,

धन्यवाद